शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 12 अक्टूबर - दिसंबर - 2025 Impact factor– 03

टुसू पर्व में जीवन दर्शन

देवेन्द्र साहू
सहायक प्राध्यापक
नागपुरी विभाग
कार्तिक उरांव महाविद्यालय गुमला - झारखण्ड

माघ कृष्ण पक्ष द्वितीय दिवस को मनाया जाता है। विसर्जन मेला दुसरे दिन से कहीं-कहीं टुसू का मेला मास भर चलता रहता है। झारखण्ड प्रदेश में भी इस पर्व को उल्लासपूर्ण उमंग उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस पर्व में सुर्य उपासना की प्रमुखता होती है। सुर्य का उतरायण होना इस त्योहार का मुख्य आधार है। खेत खलिहान से अनाज घरों में संरक्षित हो जाता है। झारखण्ड के पूर्वी क्षेत्र में पंचपरगनिया एवं कुरमाली समाज मंे टुसू का त्योहार बहुत धुम धाम से मनाया जाता है। टुसू पर्व के कथा भी अत्यन्त रोचक है। टुसू पर्व में लोकगीत भी अत्यन्त सुदंर मधुर स्वर में गाये जाते हैं। जगह-जगह पर नदी किनारे इस अवसर पर मेला (जातरा) भी लगाया जाता है। नागपुरी समाज में भी टुसू पर्व की कथा बहुत लोकप्रिय हुई है। इसे गाँवों में सुनने को मिलता है। टुसू पर्व के गीत गाते बजाते और झुमते हैं। गुमला जिला के नागफेनी गाँव में दक्षिणी कोयल नदी के किनारे बहुत बड़ी मेला भी मकर संक्रांति के दिन लगता है। इसी तरह खुंटी क्षेत्रों में रंग रोड़ी का मेला तजना नदी के किनारे वृहद रूप में लगता है। नाच गान खुब होती है। टुसू गीत के अपने राग लय और ताल भी है। यह पर्व हास परिहास का उत्सव माना जाता है। डॉ0 गिरिधारी राम गौंझ के मतानुसार -

‘‘मकर सक्रांति सुर्य का उतरायण होना। मौसम में तनिक परिवर्तन। आम मंजरियों का आरम्भ। पतों का झड़ना शुरू ऐसे ही जाते हुए शीत की विदाई की तैयारी का उत्सव है टुसू पर्व।

झारखण्ड की पूर्वी भाग का पंचपरगाना इलाके में मेला और इसे लगे सिमांत इलाकों का एक महत्वपूर्ण पर्व है। नए वस्त्र धारण कर टुसू मेले जाना। टुसू का विसर्जन। गुड़ मुढ़ही पीठा (अरसा) खाना। कुमारी कन्याओं की तलास। विवाह के सपनों को सकार करने का पर्व उत्सव है। टुसू मेले में युवाओं का तीरादांजी का खेल चलता है। शक्ति प्रदर्शन कर खेत जोतने का उत्सव भी है। विजयी युवक के घर लौटने पर पाँव पखारे जाते हैं। दुसरे दिन खेतों को तीन बार जोतने का कार्य संपन्न होता है।

मूलतः टुसू पर्व खेती - खलीयानी का काम समाप्त कर अनाज घरों में मोरा छटका, डिमनी आदि में भर कर रखने के बाद खाली समय का उत्सव है। धान कटनी के समय धान के एक बाली को छोड़ दिया जाता है। उसे बाद में किसी शुभ दिन मिट्टी समेत उस बाली के पौधे समेत उखाड़कर खलियान फिर घर में स्थापित किया जाता है। इसे दिनी बुढ़ी अथवा स्थान विशेष पर दिनी विरान भी कहते हैं। पुरूषों द्वारा लाए गये दिनी बुढ़ी को घर की महिलाएँ देवी रूप में पुजा करती है। इसकी मिट्टी को अगली बार बोने वाले धान में मिला कर बोया जाता है। अघहन की समाप्ति के बाद टुसू की स्थापना एक मिट्टी के टोकना (बर्तन) में आरवा चावल के आटे का गोला और गोबर का गोला टुसू पर्व के प्रतीक रूप में स्थापित कर घर के दिसवा (आला) को सजा कर रखा जाता है। इसे तीन अंगुलियों से तीन बार सिन्दूर का (टीका) टिपन दिया जाता है। धुप, धुवन, दीप से पुजा की जाती है। पुजा के बाद टुसू गीत गाए जाते हैं। यह कार्य पूर्णतः कुमारी कन्याएँ करती है। उपर से घर की महिलाएँ गीत गाने में साथ देती है।

मकर सक्रांति के पूर्व मास भर टुसू स्थापना अन्तर्गत टुसू की स्थापना कर प्रति दिन पूजा होती है। मकर सक्रांति के दिन सुर्यास्त के पहले टुसू का विसर्जन होता है। टुसू के लिए मुढ़ही या भंुजे वह भी आठ प्रकार के अनाजों का लावा चढ़ाया तथा प्रसाद रूप में ग्रहण किया जाता है। इस दिन गुड़ पीठा खाने की परंपरा पूर्वी अंचल झारखण्ड में आज भी यथावत है। लोग खाते भी और खिलाते खुब हैं। टुसु का विसर्जन हमेशा बहती नदी के धारा में होता है। नदी के संगम में विशेष रूप से मेला लगा कर विसर्जन होता है। जैसे - स्वर्ण रेखा, कांची एवं राद नदी का संगम टुसु मेले के लिए प्रख्यात है।टुसू विसर्जन की विशेष विधि होती है। लोग टुसू के लिए चौड़ल या बेटुला बनाते हैं। जैसे:- मुहर्रम में तजिया। उसी चौड़ल को फुला रंगीन कागजों, बांस लकड़ी, मोर पंख, धान की बाली जो चोटी में लगायी जाती है। से सजाते हैं।

टुसू मेले में विसर्जन के पूर्व हास परिहास के गीत गाए जाते हैं। जबकि विसर्जन अर्थात् टुसू की बिदाई के समय के गीत बहुत ही करूणिक हो जाते हैं। मेले से लौटते वक्त वतावरण जो करूण गीतों से गमगीन हुआ रहता है। उसे काटने के लिए स्त्री - पुरूष एक दुसरे पर अश्लील गीत गाते घर लौटते हैं। इसको लोग बुरा नहीं मानते हैं। ऐसे समय आशुगायकों की वाणी में मौन चित्रण की अधिकता होती है।

कहीं-कहीं दो गावों के युवा अपनी शक्ति प्रदर्शन के लिए नाटकीय युद्ध भी करते हैं। तो कहीं-कहीं संगीत का द्वन्द्व होता है। टुसू के बासी दिन अर्थात् दुसरे दिन किसान तीन बार अपने-अपने खेतों में हल चलाते हैं। टुसुू पर्व को औंड़ी - बौंढ़ी भी कहा जाता है। इस दिन कहीं आने-जाने से भटकते रहने की शंका गहरी हो जाती है। खुंटी में रंग रोड़ी में मेला लगता है। टुसू की कई स्थानीय कथाएँ विकसीत हो गई है। एक कथा में एक कुम्हार की सुन्दर कन्या पर एक राजकुमार मुग्ध हो जाता है। विवाह के कुछ दिन बाद राजकुमार चल बसता है। परिणामतः टुसू पति के साथ सती हो जाती है। एक दुसरी कथा में राजा की बेटी टुसू अति सुन्दर थी। वह असमय में मर जाती है। उसके मोह में राजा पागल हो जाता है। टुसू की प्रतिमुर्ति (चौड़ल) बनाकर राजा को संत्वाना दिया जाता है। तभी राजा ठीक हो जाता है। तभी से टुसू पर्व मनाया जाता है।

टुसू हर्ष उल्लास का पर्व है। कृषि उपज से घर भर जाने का उत्सव है। विवाह शादी कन्या देखने का त्योहार है। अपनी कला प्रियता को बनाए रखने का उपक्रम है। अब तो चौड़ल निर्माण की प्रतियोगिता भी होने लगी है। विजेता को सम्मानित एवं पुरूस्कृत किया जाता है।

टुसू एक अति सुन्दर मधुर सुशील कन्या की स्मृति लोकउत्सव है। ऐसी ही सुन्दर कन्या युवकों को मिले। तथा बालिकाएँ टुसू की तरह सुन्दर सुशील व्यवहार कुशल बनने तथा योग्य पति पाने की कामना के साथ पूजा करती है। टुसू ऋतु परिवर्तन के समय एक मौसम के विसर्जन एवं दुसरे का आगमन का त्योहार है। आनंद, उमंग, उत्साह से सराबोर टुसू फौदी खेल के साथ समाप्त हो जाता है।’’[1]

नागपुरी समाज में टुसू पर्व (मकर सक्रांति) को खास कर सदान समुदाय ही अधिकतर मनाते हैं। आदिवासियों में कहीं-कहीं पर ही इस पर्व को मनाया जाता है। पूर्वी झारखण्ड में प्रायः सदान आदिवासी दोनों जन समुदाय इस पर्व को हर्ष उल्लास के साथ मनाते हैं। दक्षिणी झारखण्ड में भी मकर सक्रांति के दिन धुम धाम से मेला लगाया जाता है। सभी लोग शीत ऋतु की समाप्ति के कारण मेला घुमने जाते हैं। मकर सक्रांति के दिन कहीं-कहीं पर 14 जनवरी को पर्यटन स्थलों पर

सभी लोग दर्शन करने जाते हैं। इस त्योहार में तील लड्डु तिलकुट) मुरही लड्डु या तो अन्य प्रकार की लड्डुओं से मुंह मीठा की सुरूवात किया जाता है। मेला में भी ये लड्डु मिठाई खुब चड़ते हैं। जिसे सभी लोग खरीदते हैं। अपने घर परिवार जो घर में रहते हैं। उनके लिए यही मिठाई खरीद कर लाने की परम्परा बना हुआ है। कहीं-कहीं पर रथ यात्रा भी निकाली जाती है। जैसे - नागफेनी में माहा रथ यात्रा किया जाता है। और बहुत बड़ी मेला लगाया जाता है। इस पर्व में भगवान भास्कर की उपासना भी किया जाता है। इस दिन बहता पानी नदियों में नहाने की परंपरा भी बनी हुई है। जो अत्यन्त शुभ माना जाता है।

टुसू पर्व की कथा झारखण्ड के हर पर्व त्योहारों की कोई न कोई लोककथाएँ हैं। जो अत्यन्त ही रोचक है। इसे समाज में बहुत ही लोकप्रिय माना जाता है। टुसू पर्व का भी कई कथाएँ हैं। जो स्थान भेद से किंचिंत बदल जाती है। पंचपरगाना क्षेत्र में तीन लोक कथाएँ प्रचलित है। डॉ0 गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज' के मतानुसार ये कथाएँ तीन प्रकार से है। जो इस प्रकार है -

पहली कथा है - ''पंचपरगाना के एक गाँव में एक कुम्हार की बेटी अति सुन्दर थी। उसका नाम था टुसूमणि। एक दिन वह जंगल में पतियाँ तोड़ने गई। वहाँ का राजकुमार उसी वन में शिकार खेलने निकला था। शिकार खेलने के क्रम में राजकुमार की नजर परम सुन्दरी टुसूमणि पर टिक गई। राजकुमार शिकार करने आया था पर वह तो टुसूमणि के सौंदर्य का शिकार हो गया। टुसूमणि और राजकुमार की आँखें चार हुई। दोनों के हृदय में प्रेम के ज्वार उताल मारने लगा। राजकुमार भी टुसूमणि के कुम्हार पिता से उससे विवाह का प्रस्ताव रखा। कुम्हार क्या जवाब देता। वह गरीब मिट्टी की कारीगरी से अपने परिवार का पालन - पोषण करता था। राजकुमार की बराबरी की सोच भी नहीं सकता था। पर राजकुमार बड़ी कठिनाई से टुसूमणि को विवाह कर अपने महल ले आया। सुख के दिन बड़ी तेजी से व्यतीत हो रहे थे। आनन्द महल में आनन्द ही आनन्द था। अचानक क्या हो गया राजकुमार अकारण एक दिन मौत हो गई। खुशी गम में परिणत हो गई। टुसू अपने प्रिय पति राजकुमार को प्रेम के प्रतिदान में क्या दे सकती थी। अपने पति की चिता में सोलह शृंगार कर सती हो गई। राजकुमार के राज्य में सुख, दुख में बदल गया। हँसी खुसी में नृत्य संगीत में मेहनत और इमानदारी में जीने वाले लोग राजकुमार और टुसुमणि के ऐसे विदारक दृश्य को देखकर उनकी याद में डुब गए। उस सुन्दर प्रेम पूर्ण जोड़े को फिर न देख पाने की याद में टुसू की पालकी सजाकर लोग उसे पुजने लगे। गरीब की बेटी का सुख विधाता से देखा न गया। इसी शोक में आज भी टुसू पर्व मनाते हैं। और अपनी प्रिय टुसूमणि की याद को लोग मकर सक्रांति के दिन जिस दिन टुसू पति के साथ उस लोक में चली गई। तब से टुसू पर्व मनाने की परम्परा चल पड़ी।

दुसरी कथा है - एक राजा था वह कुम्हार की बेटी टुसूमणि की सुन्दरता पर मोहित हो गया। पर राजा उसे प्राप्त करने में असफल रहा टुसूमणि अचानक असमय में मृत्यु को प्राप्त हुई। राजा पछताता रह गया। अतिशय प्रेम के कारण राजा सुन्दर टुसूमणि के प्रेम में पागल हो गया। पंचपरगना राज्य में अव्यस्था फैल गयी।

तब वहाँ की प्रजा टुसुमणि की एक प्रतिमुर्ति खुबसुरत पालकी या चौड़ल के रूप में राजा को बड़ा राहत दिया। यही आपकी टुसू है। इसकी याद में आप पुरे राज्य में चौड़ल बनवाएँ। उस पर टुसू को स्थापित कर उसे धुम धाम के साथ नदी में विसर्जन कर दे। पर राजा तो उसकी याद में पागल सा हो गया था। परन्तु चौड़ल में स्थापित टुसू की शोभा यात्रा और नाचते गाते - बजाते देख राजा ठीक हो गया। और फिर से अपने राज - काज में ध्यान देने लगा। कहते हैं- टुसू की सुन्दरता पुरे इलाके को विमोहित कर रखी थी। उसी सौंदर्य की उपासना है। टुसू पर्व।

तीसरी कथा है - इस कथा में भी कुम्हार की अद्वितीय सुन्दर कन्या टुसूमणि की सुन्दरता फुलों की खुशबु की तरह पुरे पंचपरगाना में फैल गई थी। चारों ओर टुसू मणि के सौंदर्य की ही चर्चा होती थी। एक मुगल आक्रमणकारी उस फुल सी सुन्दर टुसू को पाने के लिए एड़ी चोटी एक कर बैठा। न केवल कुम्हार बल्कि पुरे पंचपरगाना इलाके के लोगों इस मुगल के आंतक से परेशान थे। कुम्हार भी अपनी बेटी को किसी भी हालत में उस मुगल आतातायी को देने के लिए तैयार न हुआ। वह दुष्ट मुगल अपनी पुरी शक्ति से कुम्हार को परेशान करने लगा। कुम्हार को हर तरह से नष्ट कर देने के लिए उसने कोई भी उपाय न छोड़ा।

टुसू अपने पिता पर जुल्म होते देख कर और मुगल आतंक से उबकर अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर देना उचित समझी और कांची नदी में मुगल के बढ़ते दबाव और अपने पिता के कष्ट को देखकर कुद कर जीवन लीला ही अंत कर दी। न रहे बांस न बाजे बांसुरी। इसी टुसु के लिए मुगल पुरे पंचपरगाना को तबाह करने में लगा था।

टुसू अपनी अस्मीता की रक्षा के लिए जो बलिदान दी और पंचपरगानिया इलाके के लिए गौरव गरीमा की रक्षा की। इसी की याद में टुसू उत्सव मनाया जाता है। टुसू की स्मृति में चौड़ल या पालकी बनाकर उसके त्याग की और बलिदान एवं आत्म रक्षार्थ जो कदम उठायी वह अद्भुत था। उसे प्रतीक रूप में आज भी लोग धूम धाम से टुसु मनाते आ रहे हैं।

तीनों ही कथा में कुम्हार की बेटी की सुन्दर कन्या का वर्णन है। या एक में राजकुमार दुसरे में राजा और तीसरे में मुगल आतंकी है।''[2]

झारखण्ड प्रदेश में सभी लोग आपसी मेल मिलाप के साथ हर उत्सव को मनाते हैं। यहाँ की संस्कृति की अपनी अलग पहचान है। नागपुरी संस्कृति भी अपनी अलग पहचान रखती है। टुसू पर्व (मकर सक्रांति) भी एक लोकप्रिय उत्सव है। झारखण्डी उत्सव में टुसू की अलग ही महत्व है। टुसूमणि की अद्वितीय सुन्दर रूप को देख कर सभी ने उसे पाना चाहा पर सबके साथ कुछ न कुछ घटना घट जाती है। और टुसूमणि का सौंदर्य रूप सबको आश्चर्य में डाल दिया। टुसूमणि भी अपनी आत्म सम्मान की रक्षा कर बलिदान हो जाती है। ये टुसूमणि का कथा को समाज कभी भी नहीं भूल पायेगा।

इस कथा से समाज को नई सिख मिलती है। सौंदर्य कुशल व्यवहार चरित्रणम पति पत्नि की अपना भी इस कथा में परिलक्षित होती है। इसी कामना के साथ युवक युवतियों टुसू पर्व की उपासना करते हैं। ये कथाएँ कुछ मिथक तो कुछ इतिहासिक कथा भी जान पड़ती है। इतिहास में ऐसा सच्ची घटना घटी होगी। जिसे समाज आज तक याद करते हुए टुसू पर्व मनाते आ रहा है। अतः इनकी कथा समाज के लिए शिक्षा प्रद है। जो अत्यन्त रोचक माना जाता है।

टुसू पर्व /मकर सक्रांति की गीत

इस पर्व में भी अन्य पर्वों की भाँति गीत होते हैं। इस पर्व में भी खुब नाच -गान होता है। हास परिहास की गीतों में कुछ अपना अलग ही महत्व है। कुछ गीत डॉ0 विधोतमा निधि के मतानुसार इस प्रकार है -

''टुसू पुजा के गीत -

(क)जलाब सात घीव केर बाती
सजाब आइज दिया बाती

टुसू के स्वागत गीत -

(ख)बारह बछर आले टुसू करले गोहाइर - 2

टुसू स्थापना के गीत -

(ग)आले रे घुरघूरनो पोका
दखिन दने बसा तोर
आलक रे सोनाक पालकी
टुसू धन के लेगे ले।

टुसू लागत हिस बेस करत हिस
टुसू के राखके जतने
हामर टुसू बालक आहे
दुख कर मरम जाने निही।
टुसू विदाई के गीत या विसर्जन के गीत -
(घ)तोके टुसु जल में देमु निहीं।
हामर पुराव मन कर कामना।
हाँसी मजाक के टुसू गीत -
(ङ)आइज तो खामु गरम जिलेबी
इ जिलेबी में रस भरल पाबे
नी खाबे तो पाछे पछताबे
हमार मिता दाता दानी।''(3)
आइझ तो खामु गरम जिलेबी
(च)तोर सइकल तो हेंडिल बोका
कोन दोकाने लेले रे बोका
(छ)मुनगा टुसू फुल फुटे
जेमन छोड़ी तें मनक सुर उठे।(3)''[3]

निष्कर्ष:-

टुसू पर्व के गीत हास परिहास के गीत होते हैं। इस पर्व में टुसूमणि की तरह ही सुन्दर का वर्णन गीत में भी सौंदर्य का अनोखा चित्रण हुआ है। टुसू पर्व को झारखण्ड में मकर सक्रांति के दिन ही मनाया जाता है। इसी से संबंधित गीत भी गाया जाता है। झारखण्ड प्रदेश में यह एक लोकप्रिय पर्व है। झारखण्ड के सदान आदिवासी दोनों ही समुदाय इस पर्व को बड़ी धुम धाम से मनाते हैं। टुसू की पुजा गीत में पुजा पाठ से संबंधित गीत गाया जाता है। स्वागत गीत भी टुसू की स्वागत के लिए गाया जाता है। उसके बाद टुसू की स्थापना गीत भी अत्यन्त रोचक माना जाता है। उसी प्रकार टुसू की विदाई अर्थात् विसर्जन के गीत भी गाया जाता है। जब टुसू की विसर्जन कर सभी लोग घर वापस लौटते हैं। तो हास परिहास के गीत गाये जाते हैं। ये अश्लील गीत होती है। परन्तु इस समय इससे किसी को तकलीफ नहीं होती है। इस तरह से टुसू पर्व का उत्सव समाप्त हो जाता है। अन्य पर्वों के गीत की भाँति इसके गीत कम पाये जाते हैं।

****

संदर्भ सूची:-

1.डॉ0 गिरिधारी राम गौंझू ,ऋतु के रंग मांदर संग ,पृ0 सं0-20 ,21 ,प्रिय साहित्य सदन दिल्ली
2.उर्पयुक्त ,पृ0 सं0-18 ,19
3.डॉ0 विघोतमा निधि , नागपुरी लोकगीत ,लोकनृत्य एवं लोकवाद्य ,पृ0 सं0 -238 ,पृथ्वी प्रकाशन नई दिल्ली।

पारिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप और मालती जोशी की कहानियाँ: एक मूल्यांकन

डॉ. रेणु सिन्हा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
निर्मला कॉलेज, राँची

अनीता कुमारी
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

सारांश-

प्रस्तुत शोध पत्र में मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। भारतीय समाज में संयुक्त परिवार की परंपरा रही है, जहाँ प्रेम, सहयोग, त्याग और आत्मीयता के सूत्र में सभी सदस्य बंधे रहते थे। परन्तु औद्योगिकीकरण, भौतिकवाद और व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के कारण संयुक्त परिवार विघटित होकर एकल परिवारों में परिवर्तित हो गए हैं। इस परिवर्तन के फलस्वरूप पारिवारिक संबंधों में आत्मीयता का ह्रास हुआ है और रिश्तों में कटुता व दरियाँ बढ़ी हैं।

मालती जोशी ने अपनी कहानियों में परिवार और पारिवारिक संबंधों को केंद्र में रखकर विभिन्न रिश्तों के मधुर और कटु दोनों रूपों का यथार्थ चित्रण किया है। 'संदर्भहीन', 'अक्षम्य', 'प्रतिरोध' जैसी कहानियों में पति-पत्नी के बीच अहं, संदेह और स्वार्थ के कारण उत्पन्न तनाव को दर्शाया गया है। 'उसने नहीं कहा', 'अनहैप्पी बर्थ डे', 'गणित' आदि कहानियों में माता-पिता और संतान के बीच बढ़ती दूरी, भौतिकवादी सोच और स्वार्थपरता को उजागर किया गया है। 'नैहर छूटो जाय', 'हमको दियो परदेश' में भाई-बहन के संबंधों की जटिलता प्रस्तुत की गई है। इसके अतिरिक्त सास-बहू, ननद-भाभी और पीढ़ीगत अंतराल से उत्पन्न संघर्ष का भी सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है।

शोध पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मालती जोशी ने अपनी कहानियों के माध्यम से परिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप को उद्घाटित करते हुए यह संदेश दिया है कि पारंपरिक मूल्यों पर आधारित संबंध ही जीवन-मूल्यों की स्थापना में उपयुक्त और आदर्श हैं। उनकी कहानियाँ समकालीन समाज में टूटते रिश्तों की पीड़ा को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं और पारिवारिक संबंधों को बचाए रखने की आवश्यकता पर बल देती हैं।

बीज शब्द:-मालती जोशी,पारिवारिक संबंध,संयुक्त परिवार,एकल परिवार,पति-पत्नी संबंध,माता-पिता-संतान,संबंध,भाईबहन,संबंध,सास -बहू संबंध,ननद-भाभी भौतिकवाद,व्यक्तिवाद,जीवन-मूल्य,सामाजिक परिवर्तन,हिन्दी कहानी, संबंध,पीढ़ीगतअंतराल।

प्रस्तावना-भारतीय समाज का आधार संयुक्त परिवार रहा है। हमारे पितृसत्तात्मक परिवार के संयुक्त परिवार में सम्पूर्ण उत्तरदायित्व घर के सबसे बड़े पुरुष के कंधे पर होता है। इस परिवार में माता-पिता, भाई, बहन, पति-पत्नी, दादा-दादी, बुआ आदि सभी लोग एक छत के नीचे परस्पर प्रेम एवं सहभागिता के साथ रहते आये हैं। लेकिन औद्योगिकीकरण और आर्थिक विषमताओं के कारण जीवन मूल्यों में इतना ह्रास आया है कि अब संयुक्त परिवार पूरी तरह से विघटित हो गया है और एकल परिवार भी पति-पत्नी के कार्यरत होने तथा बच्चों की शिक्षा आदि कारणों से टूटने को विवश हैं। जहाँ व्यक्ति अपने परिवार द्वारा पहचाना जाता था, आज वहीं परिवार का महत्त्व घटता जा